

आशा सहायि

640

ASHA ARCHIVES

सातयत्यंचवर्षानि-दशवर्षानि ताठयन्। संप्राप्य दशवर्ष-पूजमिदं स
 माचरेत् ॥ ॥ माचागदादनास्वच्छंदनकूय-किदगसिखनय-किमप
 ददगदाव-मिणरात्रयं-वरुनयमात् ॥ २९ ॥ लातनाग्वरुवादा
 वा-ताठनास्वच्छंदना। गस्मात्पूजं च मिणं च-ताठयत्तु लातयन्
 ॥ ॥ माचागथवस्वच्छंदन-अनगदाषदग-गिखययादान

आशा पारुष्ये

ASHA ARCHIVE

640

जनकः पुत्रनामं. धनं. धनपुत्रं. गिर्यशतमानं. गिर्यलपमा
 लः ॥ २२ ॥ नृविनयासस्याना. पृष्टयाः किं पृथाऊनं. नावरा
 यदिनस्यानं. पृष्टयाः किं पृथाऊनं ॥ ॥ गमस्तपुत्रवया ६
 विशासदस. नृविदय. आर्यासकाय. धनयापृष्टाथनममा
 न. पृष्टावृपृथाऊन ॥ २३ ॥ पूगस्तुविविधेगस्तु. नियाश्र

भगवंतः। नीगिर्यावृद्धिर्नयन्ना. रवन्तिखलपूक्तिताः
 हानिलाकन. कायमावायाऊलपगस्तु. गस्तुसन्नाव. दि
 नसमस्तलाकन. मान्ययाय ॥ २४ ॥ येऽपूगकिमास्तु. म
 भगवत्वारुकः। पथिगंपूक्तिताजाय ० पूगदिनदिनः।
 श्रीवानकमपिस्तन. धनकायपनिहाता. रूपूगस्तुस्यग. ६

वृ. वा.

२

यञ्जनासिंशया. सासुसलसा. चाक्राआदिनसमस्तलाकनैयुका
याये. मसत्रसा. रनियारायमातीव. थनयाकावलीदिनउ
सासुसल॥ २५ ॥ गुलषूक्रियगीयत्त. किमागायिपथा
विक्रियननघ. ठारिः गवत्रीनविवक्रिगाः॥ ॥ अम
लयाठान. गुलसुहन. गुलमसत्रठा. कूपयाऊन. गथ

सा. इहकायमइ. साघ. ठनकाखायकान. मूलमऊन॥ २६ ॥ न
नस्यारनैवय. नूपस्यारनैवगुली. गुलस्यारनैवज्ञानस्यारन
नैवमा॥ ॥ मनुष्याजाननय. नूपयागिसागुल. गु
लयागिसाज्ञान. ज्ञानयागिसादमा॥ २७ ॥ गुलपृक्तसि
मानूपं. गीलंपृक्तसिमाकृतं. सिद्धिंपृक्तसिमाविद्या. लार्ग

व. वा.

पृच्छसिमाधनं॥ ॥ रुनरुनं नृपमय. गुलरुन. रुनरुनं कलमय. गीलरु
रुन. रुनरुनं विद्यामय. सिद्धिरुन. रुनरुनं धनमय. दानरागं रुन॥
॥ २८ ॥ अगुलरुनं नृपं. अगीलरुनं कलं. अमिद्धिरुनं विद्यां. अ
रुनरुनं धनं॥ ॥ उधमइक्षया नृपशतं वर्य. गीलमयरावमइक्ष
या कलशतं वर्य. सिद्धिमइक्षया विद्याशतं वर्य. दानरागमइक्षया
धनवर्य॥ २९ ॥ उधमइक्षया नृपं. गीलमयरावमइक्षया
विद्यां. सिद्धिरुनं

१०

दिनउमिमात्र. दानादिंश्रुत्वा खननसंध्यथा॥ ॥ याजनानां स
दमसि. उधया नृपिपीनिका. अगुलरुनं नृपमय. यदसक
नगुलरुनं॥ ॥ उधमया दानमा. सयाजीरुतमनं. दासिद्धि
याजनानं उधमया सया. दादान. गत्रुया नृपमया
नीनसिद्धि॥ ३० ॥ नीनधमने विद्यामने. यदमनं यनाः

शिववायाजानिस्तदनमदृष्टिः। स्थितं च जालं कूलसदृशम्।
 ॥३॥ पूरकं पृथुयावीतं नावीतं गुप्तं निष्कम्। नष्टं नष्टं
 शमत्वं जालगतं वृत्ति यथा ॥ ३८ ॥ पुन्याकमयं सप्त
 रूतिसप्तानध्यानां नाशम्। जालयालनदं नष्टमावाधीः सत्ता
 सत्ता शमसाक ॥ ॥ निष्कं नष्टं नष्टं नष्टं नष्टं नष्टं नष्टं

[illegible]

१६३३ पिव ३

पारं काय ववृ धाय मरुता भव कल सावसुद व धाय प्रो ह्रु पु या ववृ सा
न्या क मरु वा सुद वद कं माना या मं धन ननु गगन अधना ॥ १३ ॥
कूर्वणी द्रव संसां स तां ॥ कन की गंध माद्या य स्वयं ग कृति षट् प द ॥ ४ ॥
॥ १४ ॥ सु स व क व स ल पा भ स द न ह ह स न चं स म स लो क म न ड नि ठा ॥ १५ ॥
कन की स्था न गी ध न य म न ड ना धी ॥ ॥ वि व रं व नृ प रं व न र दि
द्या

पला प वा क मी ॥ सु द गाय ध र ना जा वि दान सर्व श पू ध र ॥ १६ ॥ ॥ ग म वि
वा गी रा जा म र द ल्य म र व ना जा ह लं ध र ड ग ग ह क मान या य ॥ १७ ॥
॥ १८ ॥ नं स र व धान स मान या य ॥ ॥ १९ ॥ क ना पि स पू र स वि शाय
क न सा वे ना ॥ क लं पू र ध सिं ह न वं ड लो व प्र का र य ता ॥ २० ॥ ग म
स स सा सा ध पू र ह ल सा ॥ क न पू र नं ग क ॥ ॥ २१ ॥ न ग ध वं ड ना

श्री
१८

श्री कवि सूर्योपासना ज्ञानाय वन्द्यः ॥ ५१ ॥ सर्वकालसहयोग्यादानं
भाग्यरूपं मेधुनस्य गन्धर्वानां कर्मावाङ्मयं दृढदण्डो वसालश्री
पिदायुः शरवर्षसंनता आरुद्यतयुग्मः ॥ ॥ वदवदीर्गिगन्धर्वो जगदा १८
मयवायवः ॥ श्रीगीर्वाद्युपासना निर्गुणः भवार्कः प्रदीपः ॥ ५२ ॥ वाङ्मया
पूजादिगुरुचं धर्मिन्कथायमात्रवदंगपूजितः सत्यज्ञानमिदं

॥ ५३ ॥

अज्ञानवशान्नसिद्धिः कामयावत्तुल्यः श्रीगीर्वाद्यविश्वसदा ॥
प्राज्ञस्त्रिगुणमदीयात्तुल्यं किं दुर्कर्मविवर्तिता शिवद्वयव्यति
द्वयसुखसमः ॥ श्रीगीर्वाद्यविश्वसदा कदा मायागीर्वाद्यः
सर्वसमस्तवपूज्यः वाङ्मयाय ॥ ॥ कृतगीर्वाद्युपासना सर्ववर्गपूजा
यत्प्राप्तवीर्यपरायणता दक्षा वाङ्मया विधीयते ॥ ५४ ॥ कृतगीर्वाद्युपासना

पान
१८

वंतःसत्पवंतवर्मिष्ठ-चतुर्वविचक्रभाः दमावंत-धर्मिष्ठ-चतुर्वविचः
क्रस-थार्थिंद्र-वाजायायडाभा ॥ ५० ॥ कुर्वन्वा-सनिर्नह-प्रमपग-रु
सदाऊ-त्रां ॥ अनाय-ययक-ला-चन्ता-विप-ह-निथा-ऊ-यमे ॥ ५१ ॥ **कुर्वन्वा-वि १८**
पा-रुन-य-यडा-द्र-लो-रु-द्र-शू-रा-नी-द्र-आ-य-स-स-सो-व-या-वि-डा-द्र-
थार्थिंद्र-र-जा-वि-या-य-म-र-रा ॥ ॥ मूल-वृ-दि-दि-वा-धी-व-स-व-र-न

इक्र ४

पवीक्रक-रा-गु-वि-म्भ-व-व-सा-यी-व-ध-म्भ-ध-क्रा-वि-धी-य-की ॥ ५२ ॥ **कु-कार्य-रु**
च-सां-धी-व-वंत-च-ल-य-वी-क्रा-स-डा-गी-ल-वंत-थार्थिंद्र-व-मो-धि-का-वी-वा
या ॥ ॥ आय-व-य-क-रा-रा-स-स-व-र-द्र-पि-य-द-ग-नि-रा-आ-यो-गी-ल-गु-रा
य-ग-नु-ष-वे-या-वि-धी-य-की ॥ ५३ ॥ स-क-ल-वे-यां-ग-ग-म-स-नि-य-सं-ना-डी-र-द-सि
डा-ला-क-डा-ल-क-गी-ल-ख-रा-व-रि-द्र-थार्थिंद्र-वे-य-या-य ॥ ॥ पि-द्र-पि-रा
क्र

गान
२०

मदादकः गामुहामिहपाचकः ॥ सुविष्वाकठिनः चिवसूयकाचः ॥
पुनः सर्म ॥ ५८ ॥ अजावतं निष्ठाविचक्रः गामुहडा कचसडा थ
थिहक्रसुवाचयाय ॥ ० ॥ सकृदकृष्टहीनात्थल्यदृष्टादिना क्रयु ॥ २०
सर्वगामुसमासाकीनुषलखकडुचार्ग ॥ ५९ ॥ कणालशकवाजानं
थथडा चनानंवाय ॥ अक्रवरुदसिडा गामुसमसयाकक्रथः

थिहक्रसखकयाय ॥ ॥ गंगिनाकावगत्तुवतवानपियदर्गनः
अप्रमादः सदादकः पुनीहीवसुडय ॥ ६० ॥ कार्ययाग्नेज्जुयसिडा
वलवंकः लाकडात्तकः अलासीमक्रडा विचक्रस थथिहक्रादीयायः
॥ ॥ समस्तकनगामुहसुडिगविजिगयमः ॥ ६१ ॥ लोकाकनहाकाया अर्थसिडा पंचव

का
२१

दियजयत्रपुः खेयवेतगुसवंत थय मंकीयाय ॥ ॥ समसुदयगानु
रुवाहनेषपनाजिकशा। लोभ्यवीयेगुभापकः १२ ग्वथकाविधीय
ता ॥ १२ ॥ पगुजाकियाडावधिसिडा. सनयावात्रसनसडा. ग. नागुशर्व
क थय मंकीयाय ॥ ॥ मेवावीवाकूपदृपाहः यत्रविद्यापः
लिककशा। धीरायथा क वादीकृषइताविधीयता ॥ १३ ॥ वृद्धिर्वे

२१

अनुवचनपदवाधया कयथार्थक क थयिंदइतायाय ॥ ॥ पार्थिवस्य
चरणस्यवदामिगुसलकसां यत्रसंवर्द्धनराजाता छ। गानसुथेवत्र ॥ १४ ॥
वाडाडादासुडासकसिहानानवकनजाजावृद्धिमानया तं ॥ १५ ॥ अविद्याय
॥ ॥ अकनवकृतीनानांदयां कर्वेतिहं गद ॥ ॥ आदिमथावसानपुनर
यास्यंतिविक्रियां ॥ १६ ॥ ॥ थमनिमिलिनकूलवतदयावंतजाउत्रपाः

मान
२२

नम्रादिसधंश्रंतंश्रवसानंमंमाव॥ ॥पशिरुषुगुःसर्वसूर्यदावा
 मुकवला॥गमासूरवेसहमुनेपाहृगवपगस्यका॥७७॥हानिगुशि
 जनयाकरुषसमसंःसूर्यजवयाकथासमसंभवनसूर्यदात्रकिता २२
 वरिचंहानिकृप्यस्य॥ ॥पाहृनियासूर्यसंतिनाहृमुपाः
 गुमाहायगरस्वगतिवासवपूष्कवसवधनागम॥७८॥हानीडाक
 गुमानु २

वपाकार्यसनाजायासनागुसःगगःलक्ष्मीवृद्धिःसर्गवास॥ ॥सूर्यनि
 याश्चसानुगुयादावामदीर्घः॥अयगाम्भार्थनासंभवननकेयतनैकव॥
 ॥७९॥सूर्यज्जाडवपाकार्यसनाजायासनायापःअयडसःवननासः
 नचकवास॥८०॥कस्माहृसीवितानिखीधर्मकामार्थसिद्धयागुस
 वंननियुधसुगुसहीनंविवर्द्धय॥८१॥धर्मप्रथकामनासिद्धया

तान
२३

यमशुभवंतस्मिन्नाङ्गवपमात्र-निर्गुणस्य ^{मात्रं} ~~स्मात्~~ यथायत्किंचित्कुरुकरुस्थिः
गुरुं वा यदि वा गुरुं ॥ रीति संवत्सरे न राजासूक्तं दृष्टुं नो ॥ १० ॥ गुरुवंतः
स्मिन्नाङ्गवपानगुरुगुरुया हनं-सूक्तं नदृष्टुं नो ॥ लाङ्काया लक्ष्मी
वृद्धियाय ॥ ॥ यथा ह मया योक्तं न कायगा उत्तरे दने ॥ ११ ॥ यथा पूज्य
मया वकुलेणी लन कर्मसा ॥ १२ ॥ यथा भूमि वर्यो यो यती सा-कूपदा

२३

य-साक ह्याय-भूषा थं पूज्यया यती सा-कृत सवत्सव कर्मसा ॥ १३ ॥ यथा पूज्य
लक्ष्मी वां धवा व्यसनागम ॥ १४ ॥ यथा काले रथा मित्रं लया च विरुद रूप
ता ॥ १५ ॥ दास इत्यादि रस्य कार्यं द्याया डी-सूक्तं नयादि रस्य यथा
दास-मित्रयादि रस्य विपरिण-मित्रियादि रस्य वन रुच्य ॥ १६ ॥
न्यावद्विविधा नाङ्ग नृमाधममय सा ॥ १७ ॥ नित्या यथा यथा ग्य विविध

पान
२६

नकमिक्कस्यचिन्मकुंवांमि कस्यचिस्त्रियशाकाच॥धवजायंममिः
ग॥सिचिपवसु॥५॥१॥॥गवमनूषाइयंरुमनूषाया॥२॥६॥
षइयंमनंमिरुइयसुनंकायौकाचसदय॥१८॥॥कायौथीरुजा
लोकंनलोकर॥१९॥॥मार्थदशावत्तुकीचक्रयदद्वापनिमप्रतिमातय
॥२०॥॥कार्ययान्नसावनलोकएजयमावग॥॥तंक्षयसासावा

२७

नइइत्वनामदनासमासागावगा॥१८०॥॥कृतावसनिभानिदाशुः
हफसाकगावति॥१॥॥कृता॥सौरवंदचिदस्यइइनस्यकृता॥क्रमा॥
॥८१॥॥श्रीगेनइस्वशुभाश्रयानिदामइ॥गरीतावीधयायसमइ
॥दचिदुक्रयासखमइ॥इइनयाकैक्रमामइ॥८२॥॥गखवसाकृ
तामान्यइइनस्यकृता॥क्रमा॥॥वसासीसिकैत॥स्वह॥॥कृता॥सापं

मान
२६

वकासिनां॥ ८३ ॥ खयाकमानमइ इकेनयाककमानमइ वंभाः
याकखइमइ सिनाययाकसत्यमइ॥ ॥ इवेनसावलंवाडाया
सानांनृदिमंवलं॥ वलंमूरखेसमोनखंवीयाभासमनमंवलं॥ ८४
वलमइययावलइसंवाडा वलिखयावलइसखाय मूरखेयावलइ २६
लंभानमवाय॥ श्रीवयावलइमंनसत्यसंहाय॥ ॥ ननाथानांदपि

डाभांवालवृद्धकपसिनां॥ नृन्यायपविरु कानांशर्वसांपार्थिवागकिशा॥ ८५
गकिमइययादीयेडया वलकपयेकवृद्धयामधिया नृन्यायइक
यागकिइनंवाडा॥ ॥ याविरुस्यार्थदीनसगुग हिमुसिभस्यव
॥ इदय (म) कदग्धस्यसूददभनिमोषधं॥ ८६ ॥ नगीवतस वन
इल-एयइय (म) कइसे-००० मिगयाखायसायदीषधी॥ ॥

वान श्रुतवचसनेपापदहिकगक विरु द॥ जाडकाचममम नवायसिष्ठ कि
२० सर्वांधव ॥ ८० ॥ जागदुल विपदि दुप इहिक दुप रुयदुप जाडका
वसदुलस नः गममनस दुप स नः गया च दुप अ ०० ०० ०० ॥ ॥ २०
वगु दि मेनुषा मीदु न वी सवे कर्मसु ॥ एव न वी वि सो का मा लुः
वेनइ दि ता नन ॥ ८० ॥ समरु के मेस एव गडा धन एव न ॥

ह
विया पूरु पूनी याखा रचुं व नयोरां ॥ ॥ नद वा विद्य न का ष पा षा म
नचमृ नमय ॥ एव व विद्य न द वा रसा रु वी म ह ल च ॥ ८० ॥ मिंसं
लादें सं चा सं द व म द द व इ न एव ना मा नान ॥ निषा सां द व ना
वाया हान मा वा यी द व ना ॥ द व ना या पि नां ह लो षा द्र (सा इ न
द व ना ॥ ८० ॥ निषा या द व इ न एव न एव ना द व इ न हान ति वि

जान
३०

मिसमर्थमयागचूमीमिवि॥ धनइथं धर्मदानयायमन. धर्मजडा धनतपसिया
यावत्तनइकया लोया॥ ॥ बालवेवचनद्वर्ममनिर्णयं लडी विनी॥ रुसाः
नामपि पका नां॥ गवर्तपतनैव॥ ॥ ॥ धर्मयापइव बालकसमा ३०
न. धर्मसाधनपिबुखदुन. पाकइडा रू लकु सिंङा थं॥ ॥ सदैव
गवत्ता धर्मका धने वदतां पथा श्रद्धवद न ह्ना नंप्रमादनद तं प्र
३२

नां॥ ॥ ॥ श्रद्धकावाइयान धर्मरूप. काधीइयाननपावत रूप. दृढ
मइयानहान रूप. कृमयमदयानसया विद्या रूप॥ ॥ श्रद्धीप (पु)
हमादा माद गागुनि वसाश्रिका॥ उपडी वादता के न्या स्वार्थपाक
क्रिया दता॥ ॥ ॥ अग्निमइइरुसलाम वार्थसाक्षी मइलाइन वार्थ॥
दाम का स्त्री विद्या के न्या वार्थ थडा श्रर्थन पा कया सावहक

शान
३२

अथ तादृक यासा च. कागी वासया य. सङ्ग न संग काय. गंग स्नान या
य. गिव पूजा या य. अथ तादृक या सा च ॥ १०१ ॥ ॐ शिषी चान क सा च सं
पद पथ स ग र के समा फ ॥ १ ॥ ग म सु थ व दू षा वि द्या न्व न द्या नी शि चः
दू षा ॥ व द थ व दू षा वि ष ॐ न य अ व दू षा ॥ ॥ प रि न यो मि स्वा इ
न ग म सु. वा जा ग मि स्वा इ न नी गि ध र्म. वा द्म न य मि स्वा इ न व द ग म सु

ॐ न य अन य मि स्वा इ न. वा दि य ॥ १ ॥ वा द्मि ध र्मि शि ध र्म दू षा य य य
स र्म गि मा ॥ वा जा न्ना इ रि ठ रि सु य थ वा जा न थ अ दू ॥ २ ॥ वा जा ध र्मि
इ न स. अ दू ध र्मि इ य. वा जा न य य य न स. अ जा न य य य य. वा जा न
दू मा र्ग स व य य य न स. अ जा न व दू मा र्ग स व य य य. थ न न ग ॥ थ वा जा
व द व य व. अ थ य दू व द व यी य ॥ २ ॥ उ य र्मि सा दू स ॥ थ र्मि व ल व द्मि १ य वाः

वान ३३ कुमां॥ व ३३ यस्तानि धर्मि तिसस्य दवाधिर्गं किं न ॥ ३॥ ग्वनपूय वषया डयम
 उन्माह वेर्यवलवक्षि पनाकु मयती॥ थपू नृषखछाडा देव नो यं गं का
 वायु॥ ३३॥ सास्यदान न रुदन. कु म सच व से न च॥ सर्वग मुसदा ग रु
 नद्या न नीयान वाधि प ॥ ४॥ ग्वनख वा जान. सास्यदान रुद धाया व
 मुकन उपाय या हाडा ग रु माच के माच॥ ४॥ पा रु ग्नागी गु लेना गी ॥

गीया रेजने १ सहा॥ गा मुवाक्ष न स्या वा नृय ते १ पंच स रु सी॥ ५॥ स या ग स र्पा गी
 इय. गु स स वा गी इय. सक ल प वि वा र सी स र्ग हा गी इय॥ गा मु स वा धी इय
 संग्राम स या वा इ थ न दा गा वा जाया ल के सी॥ ३॥ उ ल म य सि पा ग न ग र्वा
 रुदन या इ य न॥ स व स भ य दान न स म म ल प वा क मे ॥ ४॥ स या नृष इ
 वं न म स्का च न मा न या य ग र व इ वं रु द ना न सो ही क इ वं. व न न रु

दनयः थमरु ल्याद्रु ल्या प लाकुमश रुदव य ॥ ८ ॥ ना ल्मच्छि डं य वदशाः
 वान ३४ द्विद्या कि डं य व स व ॥ गद रु मं वांग नि य व ल व व स रु य रु ॥ ९ ॥ थ
 डादाय म व या रु वि य म रु डा म व या दा ष द न सा ग व ता थ भि मि व का
 ल स क रु वा (गा प च प वा न डा मा थं (गा य व यं ग य ॥ १० ॥ मन सा वि नि
 र्क कार्य व व सान प का र्थ रु ॥ म रु ल रु म ग र टा ला कार्य सि द्वि म्भ डा

॥ ॥
 य रु ॥ ग व न रु म न य न म न सान वि र च या कार्य सि द्वि म रु ला न प का ग म या
 य मं रु थं गु फ या य मा व ॥ ८ ॥ ड य का व ग ट दं रं न ग रु लां ग रु म रु व रु
 ॥ पा ट ल स न ल रु न क रु क रं व क रु कं ॥ ९ ॥ ड व रु या र न ला र्थं ग
 रु न या डा ड व रु का स रं थ मा व ॥ ग थ क रु न क रु क रु खि ना ड
 पि का या थं ॥ १० ॥ व रु द मि रु रु व न या व ला लं वि रु रु य रु ॥ ग थ

वमान ३३
वमागत कासहिंघातघटमिवाभ्यनि॥ १० ॥ विपत्तिस्तु संकटव्यमानः
थडासंपत्तिरुच नासः अक्रमात् लक्ष्मः वनपाक्या काथा रूयमाव॥
१०॥ इति कृकट कक्षरु सध्वनं किं नराचम॥ मध्वनं वदक ल्या सिला का ३३
यैमध्वनपिय॥ इति कृकट कक्षरु वचन कृपयव तदुया सध्वनन कृ
यैमध्वनन इव समस्त लोकं सताय॥ ११ ॥ इति काव्यवसत सध्वनं इति

[illegible]

वान
३६

धनायदा ॥ कृपया नापदा नीच वडन आरंभो चित्त ॥ १४ ॥ मिश्र वक्र
विषन केन रुडा म्. गमुक रुडा म्. वरु ना गया रुडा म्. ह मिमलना
गया रु विडा म्. पन रि वि षूयया रुडा म्. भन रुडा म्. आरंभो
या ॥ ॥ आरंभो यित्त माया नमसि वदां पावता ॥ डि द्यां संमं डि द्यां सनन
गेन वक्र हार वता ॥ १५ ॥ भन आरंभो यी म्. न रु वद रुडा म्. वरु वरु

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ राष्ट्रं पालयन्निधौ निधौ धर्मपत्राः
यशश्चानिर्दिष्टं पत्रमेतन्नियमिधर्मसि पालयन् ॥ ॥ नानाधर्म
सहस्रं वाङ्मयाय ॥ ॥ न पत्रमना इयं वपुर्हृयी ॥ ॥ पृथ्वी
विविधं निमूलकं न काचयन् ॥ ॥ सा सा काचं वाङ्मयं नियमनाया
निमादनां ॥ ॥ ॥ वाङ्मयां शृङ्गोद्वं मासिनीयां शृङ्गोद्वं ॥ ॥

कान
३१

काउधय. कानथपुलियमइ॥ ॥ अविमिरमूदा सीनसव्यहं सुवि
रंगुव॥ यानवृथं तिसदा ला. सवसव्यननधरि॥ १८॥ ग्वनरुम
नृष्यन. अदि धयमरु. सि उर दयीक. सु. धनीरुममहिजयमे ३०
नो ला धय. धय रुम सर्व धानसं नासइय॥ ॥ अनायचययंक
ला. अनाथकलसुपिय॥ अउव १ सर्व रुजीवनरं गीरुं वितन

मि॥ २०॥ आयमसाय ययया काननाथमइ कलदयाक. सर्व रुजीवा
गीभवतमनमरु कलजशं नागइय॥ ॥ क१ काल १ कानिमिगसिः
कायग १ काययागम॥ कला संकोचमगाकि विमिर्वितामइमइ
॥ ३०॥ कू कालं सुमिर. कू दग कू पाफि. कू अयाफि. डि सं डि ग
किरु. धनिविना वा वं वासाव॥ ॥ सिं हाद कं वदाद कं मि धं व ता

गान
३८

विकृष्टात् ॥ वायसां च विषां च वद सून मी सि गदहात् ॥ ३१ ॥
सिंद्या के कृ गोष्ठ ससन वा हा च या के कृ तागु घमन स्वाय के प वा गु घ
सन काषया के का तागु घमन ॥ ॥ विवाया के ख तागु घमन माध्याः ३८
के ख तागु घमन ॥ ॥ पुरुत काय म लं वायान व २ क र्दु मि कृति ॥ सर्व
वर्त गतः कार्य सिंहा द के विधीयत ॥ ३२ ॥ गडा धन चि कि धन कृ काः

ये कार्यो सिंहा द के विधीयत ॥ ३२ ॥ गडा धन चि कि धन कृ कार्यो ह व मां का
चं रु या य व मां लि सिद्ध म ह तात्र म ता न त थ कृ ता सिंहा या गु भा ३२ ॥ गृहि
या मि तु सं य स व के व ल्य डि ता न व १ ॥ कार्यो का लो प्र प न्ना मि त सर्व
योगि साध य त ॥ ३३ ॥ कृ कार्यो ह न मां का हा थं गृ डि य नि गृ द
पा द डी का र्य या य थ न कृ ता का हा या गु भा ॥ ॥ गृ धनं व य र्द व

वान
४७

वान ४०
 र्थमसिधुत्वायः श्रामसमयः श्वाकृतापसद्यः संतापीरुयः श्रममाग
 दृयागरी ॥ २१ ॥ विंगदतुमाश्रयाकायसु कुर्याद्विचक्रमशामंडायाति
 विपुनैर्वीनऊयासु रुविषाति ॥ २२ ॥ धनंज्ञानादाकमाजीयताः शास्त्र
 ग्वक्षयायर्गः अफ्रनसर्वगक इयवपाडाकमगवः सायु २२ ॥ जमस्वी
 यमन्व्यानामनमसंतफवर्मा ॥ पत्रस्यानापकावसपुंमां रुवतिविगद

॥ २६ ॥ ह्यनिलोक्तः निप्रथमवचनद्वयं चित्तं संभावकी अः पञ्चमवचन
कावमष्ट निमाधुनया विण्दुयु ॥ ॥ इकायमा १८५ ग्नी वा ४ यजः
निमदा रूव ॥ असा विरा विनायक्ति हवृष्टि वृष्टि यक्ति म ३॥ ३० ॥ असा
इत्येवमावचनकृत्वा यजसमय सतननपु हवृष्टि इमायः यडा २ वे चित्त
संनिप्रथमं मायं ॥ ॥ असायसंति कूर्वीत यज के सा निमं प्रति १५ म्भुवा

गान
४२

नवरात्रपुके ४ पुवादा गच थियेभा ॥ ३१ ॥ आयदा वरससुया के वक्र
पाक रुचयेयाने आयदा रु क मावः पूर्वसः पीवा मं उ न वान वरा
नसाया क्रि प त क हाडा आयदा त य य हा थं ॥ ३१ ॥ इ रु चं साग वी रू
समर्ग वान न वलं ॥ अरु त पूर्व नाम ग म रु व रु साग ॥ ३२ ॥ अय
व र व रु न पी वा म वं ड न वान प्र मा रु सा व थि या हाडा इ रु चं सम रु रा व

यया वं साग व समुद समुद्र रु तं ॥ ॥ अरु ग रु व रु पं च वि वा धं च प च स्य वं ॥
पने ना क मा मा ने रु वं यं पं वा रु चं ग रं ॥ ३३ ॥ अथि वि वि च वा जान इ रु
यो धन रु वं हा हा रु य नि ग रु कि रु रु कि रु ऊ प नि हा रु रु कि रु
प न स्य व न वि वा ध रा रु वं वा हा प च स नान रि डि स वा रु का व न स्यं रु क
ल मा ल य रु डा ना ध रु ॥ ॥ रु त्वा रु त्वा व स मा सि रु त्वा व व स मा रु

नान

५३

कं॥ ह्यगयः समतां या नि य ४ य च २ य च न व स ॥ ३४ ॥ थडा थि थि ह्य मिः
गमः श्रुति न वे रि गाय म क डः थडा थडा वे रि ह न ना सः सम रू द वः
यः मा व के रु ड थ न न थ ड ह्य मि वं वू ड वे वी ला व ना म गाय ॥ ॥ वि
ना दः वा म नू षा सा म ग्वा ना मे थू नै क वं ॥ श्री सो रा ग्धं क वं श्री सां व
मु सा सा न पा क वं ॥ ३५ ॥ म नू षा या क व ह लं चि का म व या क व ह

४३

वं मे थू न ॥ श्री या क व ह लं सो रा ग्ध म भव व मु या क व ह वं न रा व ॥ ॥
श्रु द्वा डे वा म नू षा सा म न धी वा जि नां ड वा ॥ श्री मे थू नै क वा श्री सा म ग्वा
ना मे थू नै क वा ॥ ३६ ॥ म नू षा या क व ह वं म व या क व न सं द या क व ह वं
ध वा म गायः श्री या क व ह वं मे थू न म गायः सं द या क व ह वं मे थू न या क
न ॥ ॥ क ष्ट वृ छि ४ य वा धी नाः क ष्ट वा सा नि वा यु य ॥ ह न पू र्वा

बान
४४

पसंयुक्तः सर्वकष्टविद्वत् ॥ ३१ ॥ मन्त्राय कष्टं वपुःश्रुतिः
काचनवानः थडाश्रुति काचनश्रुति ममथलंक कष्टकः समस्त यासि
नृश्रुति कष्टक कष्टपाध नाश्रुति पातमद्विद ॥ ॥ श्रुतिनायाधि
नामूर्खः पुवासी वचमव कष्टाडी वितापि मन्त्रापंचपंचनंद ४२ वंता
गिन ४॥ ३८ ॥ लिआलाका नवर्कवपुः श्रुतिनापी उवपुः श्रुतिना

४४

॥ नयधूननक्रया रुकुं चागीक्रया रुकुं सख ॥ निवि श्रुतं वपुःश्रुतिना
सकुत साह ॥ ॥ मूर्खिकवर्क कानि नृपः सख मिश्रमभाति भी। यार्क
कुर्वमयस्यः मस्यानि तात्वं गुरु ॥ ४४ ॥ वृष्टि इवसाह रिक्तकृत्य
योगनपीतामस इष्टु क्रमूर्खी निविथलवम्यडा क्रयानि यरुडसाह ॥ ॥
सर्वे एव वमं इष्टु सर्वे मास्मवमं सुखी। न विद्यात्मासनः लक्ष्मी

वान
४८

अथमार्यामिसावव ॥ मार्गमिमिचटाषसः स मापिविसमायम ॥ ५१ ॥ असा
धूडासंगदासन सावृष्टः असावृष्टचः अन्धकावराकाषनः सचचमार्गः
सचचमहृत्था ॥ ५२ ॥ उरुम ॥ सदसंगमः कानयानिसमन्त्रमि ॥ सुखोदुः
सानिधयर्कः गन्धिर ॥ ५३ ॥ कसुम ॥ सद ॥ ग ॥ ५४ ॥ उरुमसंगदासन अथः
मज्जानिः उरुमदयः खानडीना पचादानयासगिवसवधवनायादाथं

[illegible]

राज
३३

भनइकइवसन्तं हायाभइगुरुइ वं ग्वसाथीनिर्जनवनामयसोनाथां ॥
सर्वे कामववत्तानां कि यावत्तमनइ वं ॥ तस्मा रुदर्थं निवयासा विमकाधन
नकिं ॥ ६८ ॥ समसवत्तं या सिन्तं कीवसुद रुम धननिमिहिन कीवसमा
चमं धनइ पुयाजन ॥ ॥ कृस्तीरं गिकुई वात्रिक पूगाइ नान कलं ॥ कम
कीरुनयत त्रोका नायु वोव सोहना त ॥ ६९ ॥ कवहनन मुसिन कइ वं मीत

३३

भविषाववमास्ति यथा ॥ ७३ ॥ समूडनइ डापुधी पा कावनइ डागुरु त्रोका
नइ डादगां गिबिजनइ कया थडावचिनइ डा ॥ ॥ नगुदासिनवाइ
सानिनपाका वानवक्र काथानव (ना ने व वं वा वास्यगी साय कूलि
यथा ॥ ७४ ॥ कया वासया पा का वया वक्राया वं नय डिडा गिबिजनइ
कया कृ नं वक्राया वं नं वक्रामइ डा ॥ ॥ नदी पा नयत कूलं नानी पा

व न व म ह ड अ रि ण्य म व र म सां संग म स ड उ न पा ड व व ड रि ण्य म व म सा
र व सां र ड थ न ड ड अ रि ण्य ॥ ॥ ल क्री न क म दी न ड क ल दी न स च म मी ॥ न
प र व म म ज न वी गि ज व र ति वा स व ॥ ॥ ल क म म ड य क स क क ल दी
न य क म व स मि क प म स मि वि क न व ड न व र म म म का र धि व म
र ॥ ॥ य स र य वि र पा की क स र य र म क वि य ॥ ॥ र न र ड य र

उ मा र्थ व र म न र य ॥ ॥ किं जी र र र ह रि प र ॥ ॥ क स र म प का र
क ॥ व र म क ४ क ल ल व य र वि ण म र क ल ॥ ॥ ॥ ज प ल य र ड य
न र क क र य ॥ ॥ क स र म वि र क म क ल व र य र व र म क र म र न म
क र व थ न स क ल वि ण म मी ॥ ॥ ल क र य र य र प र य र ड ली
द म ॥ व र म ॥ क र म का ल व म न पि न र म र य मि वि कि यी ॥ ॥ ॥ मि मि

मान
२०६

कृष्णकामरूपः साहसिनगुलिह्वयः साहिबलिकाश्चात्र थप्रया
विकामगच्छतां ॥ नृपुत्रावद्वयः पूजागयासका यद्विबुजरा ॥ याऊ
गयाग्वमभयनी लंवावृषमठसुजरा ॥ ८३ ॥ गजाचमूयदसे माया
विगच्छन्तः गयासनिताः अनजयमययैयह्याक नीलथ साउक्य
पू ॥ ८४ ॥ केनरु कृष्टकरीदममाभनवदिना ॥ दक्षकरीदने सर्व

७६

कृष्णमकलयथा ॥ ८५ ॥ एषुनिगदसिमानः वनदकादरुचया थथा
कृष्णकामरूपः कलदकंदरुचया ॥ ८६ ॥ केनापिसृष्टकषपृथिवीरुतः सुगंधिनो वासि
तिगद्वसर्वः सपुष्टकलीयथा ॥ ८७ ॥ सुगंधस्वानदायः सिमाकमानः वनदकः सुगंध
वासनायाता ॥ थनाथसुगंधः कलदकथकाया ॥ ८८ ॥ यस्यपूजावगमायुषायासु
द्वन्द्वमिनी ॥ विरुवधपिसंशुक्लः सुगंधकस्यमहीकले ॥ ८९ ॥ गवधयापूजसर्व

बान
७८

कति नि धासासाचं द कवननं संडुष्ट रुजः ध्यासा र्गो रुचं दृथिवीसा ॥ यपूजा
सुपि दुर्वेग्याः सपि नायमु प्रायकः ॥ गमिर्गु यउ विष्वा सत्ता सा लयो यउ निर्वृति सा
ए० ॥ गव अत्र वृथा वगासाहः अत्र भूकापूः गव अत्र न पा सन वी विनाय सा या अत्र भूका
ववः गव था व व व व स रुचं अथू का मिः गव अत्र मि स संगी भू का मि रि ॥ ॥ य
स्मि नूजी व नि जी वं ति वि य मि गं च वा व वा ॥ सह ले जी वि री गत्या ॥ अ सां र्थ का न

७८

जीवति ॥ ९१ ॥ गव अत्राह वान वा द्वा भ मि ग वं धू जनः स्वाह वानाः थ अत्राह वाना
सह लः थ अ नि मि रि न रु च या स म स ला कं म्वा क ॥ ॥ स जी व नि गु र सा य स
म स धर्मः स जी व नि ॥ गुरु धर्म वि ही न स नि रू ली न स जी वि री ल ॥ गव अ
म नू य गु र धर्म न सं यू कः थ अ स जी व का य गु र धर्म की न क या जी व न नि
ह ल ॥ ॥ वा वा स य स गी य स ल यो नू य व गी स ती ॥ ल अ र्था ग व री य

वान
३०

समस्त लीन स्य जी विरी ॥ ८३ ॥ ग्वस्त्र या वचन समस्त स्वती चाना स्त्री इव सी मूः
मिसूनी सी इया ल स्त्री दया धर्म अति लागी ध्यासा हाया मरुत ॥ ॥ धर्मो
र्थ काम माक्रा र्था य सो कापि न विद्यत ॥ अज्ञा गल सन्न न सापि निय र्थ न स्य जी
विरी ॥ ८४ ॥ ग्वस्त्र या धर्म अर्थ काम मा क्र सक्त ता इव स न्न स द गा धर्म ह ले वा
गल स वा रु इ धर्म सा हा या नि १२० ॥ ॥ धर्म सत्य विरी न स्य दि नं या नि य वि

दानू गा मि न ॥ धन क गी य दा सी गा न दान इ १ ख र्ग गि न ॥ ८५ ॥ सी या स वी द
श या क्व वि न अ र्थ ल क म ग श या हा च हा सी ग द्वा डा सी मा या द र्थ द न इ स्यः
क ग स्त्रा ड् धन न ध प नि अ मि इ १ ख र्ग ग ग या न ॥ २०० ॥ १०० ॥ ॥ न्नि पी वान
क सान सी ग द्वा वि सी या न क स मा र्थ ॥ * ॥ गुरु स म्भ स वे ड ग ती ॥ * ॥ सी ग ले
क व ड् ल ख क स या ० क स वा * ॥ गुरु ॥ १०० ॥ १०॥ क ॥ १०॥ १००॥

मान
५३

कर्म भग्न काल रुकं गहाधन ॥ ० ॥ किं कवि विवकावः ॥ ५ ॥ गायन
विद्यगा नग्न अयं कर्म मः प्रक कः किं कवि विवका ॥ ३ ॥ कर्माय क्ता नाडा एव था
नमः कनमद लय विविधान कृपन कर्माय मः ॥ ६ ॥ विपु या ड नमः ॥ ० ॥ ५३
कदली वन मधु क्ता विनिर्मन्त्र यत्र कर्म शास्त्र विव किं ड न कर्ता गुरा वा
न किं कवि विवका ॥ ० ॥ कली लवन स वा न न विव ल वा क न क्ता य म रु थ ॥

विद क म द था न स गुरा व ग ड न य का ग म ड ॥ ॥ पल य रि न म र्था दा ए व कि
नि कि ल सा ग वा ॥ सा ग ना रु द मि क्ता किः पल य पि न सा व व ॥ ॥ पल
य का ल स म ड न म डी द वा व ना म या क ॥ सा व ड न रु का याः पल य रु व
स न्दीः म डी द म ना व ॥ ॥ म पू र्व य रि ल्या क्तः स र्था द सा ग य सा च ॥ य रि
य न म रु स वा न च र्थ मि क क दा व न ॥ ६ ॥ क ल्या न का ल स म म नू प र्व र्थ य

यान
५४

यथा समुद्र नदीनाम धन धाम धातु पूर्य शक्याः स्व वल सै वलय मद्रया ॥
विद्य न म्नी पुत्राय ली विद्य न वा ल (६) न य ॥ यात्र यी विद्य न नी च दया साध
पू विद्य न ॥ २ ॥ म्नी ज न या क चं च ल द यी डः नी च या क कि ड व व न द यी डः ५४
साधु ज न या क द या द यी डः ॥ साधु १ स न्ना न मा तु ग र व ति द द वि का
यी ॥ ५४ य का न ग न ना पि इ र्ज न १ क न ग च न ॥ २ ॥ साधु ज न या क मा न या ५४ साधु

न थ ड ग नी न र्थं कार्य या स य ना ग इ य इ र्ज न या क म ग कि ना ड य का न या रु नी
थ ड या य म डी ड ॥ ॥ वृक्ष वा क्षा नि ग्ना ला मि ना वृक्ष १०॥ सु वा ध क १५ ए
क च म ल दी प च दू ही ना न प ग्थ मि ॥ १० ॥ ह्ना नी दू क ग्ना मु न वा ध या य डी
५४ः स र्व इ क या ग्ना मु न वा ध या य म डी डः ॥ ग व ता भं ध न सा स न क्का य र्की न
ल र मि ख म दा न स र व हा भं ॥ ॥ ना वि क ल रु ला का ना द ग्थ क क पि स र्ज ना

पान
३३

॥ अथपि वदनाकावादि न वसनाद वा ॥ ११ ॥ सकुनहली नारीकाव
ध्वं अर्पितयसकाह उरुनह काया वरगसिध्वं अर्पितयको का ॥ ॥
चदनंगीतल चदनन उरुनह मा ॥ चदचदन धर्मि (धसाधसंयकगीतली ॥ १२ ॥ चि
दमागीतल पी खलुगीतल धमममासि न्वसाधहन डानायवाने अतिमी
तल ॥ ॥ अथमाधनमिहकि पीतिमिहं तिनधमा ॥ उरुमानानमिहं

३३

तिमानिदिमदगाधनी ॥ १३ ॥ अथमजातिप्रधनवीक्यायु मधुमजामिनवीमिः
वीक्यायु उरुमजामिनमानवांक्यायु कडाधनपूरुयाधनेश्वरीमान ॥ ॥ मजि
कावधमिहं विधनमिहं मिवाधिव ॥ १४ ॥ कलहमिहं किगाकिमिहं किता
धव ॥ १४ ॥ शाजिनीनयात्र वाक्यायु वाजानंवांक्यायु नीचजीनकलह
वांक्यायु साधुननगाकि वांक्यायु ॥ ॥ अथवाधमिहं तिरुपमिहं वा
मि

४१

यत्र कार्येषु कासा ॥ स्वकार्यक्रियसाधकः ॥ सह कार्येषु निर्वृत्तिनाशकार्य
प्रविक्रमः ॥ १९ ॥ सर्वकार्यसंयुक्तिगा कर्मः ॥ २० ॥ कार्येषु न साधवत्
मिथ्याकार्यसंनिवृत्तयः ॥ बाहुकार्यसंवलदनचसाधुनां ॥ गिलाखववस्थितिः ॥ २१
॥ २० ॥ नीचकार्यसंवलसवायाधः ॥ गायकननुनं ॥ सयमद ॥ साधुजनया कार्य
संवलसवायाधः ॥ लोकासवायाधः ॥ ॥ महतामापदः ॥ सति ॥ महतामपि

संयदः ॥ २० ॥ नवमनूषय ॥ नापदा नेव संयदः ॥ २१ ॥ गायकननुनं ॥ सयमद ॥ साधुजनया कार्य
संवलसवायाधः ॥ लोकासवायाधः ॥ ॥ महतामापदः ॥ सति ॥ महतामपि
दमा ॥ विष्णुस्मरणमाग ॥ मदातः कवसंपूठ ॥ २२ ॥ महादवसे दुष्टयाय ॥ क
के यणत ॥ वदमास दुष्टयाय ॥ वस्तुलायन ॥ विष्णुसं दुष्टयाय ॥ समनयाडा ॥ गाय
नपूवसं नापयाय ॥ दाथडाडनयाय ॥ ॥ लेखक ॥ ० क ॥ ० व ॥ ० न ॥ ० य ॥ ० म ॥

तान
८६

भुवि ककाशा सर्वव्यसनिनामूराऽक्रियां न गवपति ता॥ २४ ॥ वायुश्च न सी-
पनपद्मसी. गामु सयाडा वा कं समर्क ४४ रवीपूर्ववा यमवह याजाद नं ओह्यपति
तकाया ॥ वागिद्यमववाशिर्घ्न-नाजसवा न पावनी ॥ वागाम्ब वा त्रिकूर्वकिका ८८
तवाऽकृषिनादिका ॥ २५ ॥ सुवर्ग्यावनडा. गुरुआदियावनडा. वाजयास
वातपावनयावास. धीनयनि सनेधय ता इक्याय का रात्रजनशकया. काका

हिडन्ती कावह लक्ष्मीखनः ५३ हिड शचसाविलयमा गतडा धनं सखना ॥
दगर्तीया मयमस्वाऽधनवं न गवनिर्गु या ॥ २६ ॥ दत्रस्काप्र पिदय कः किं गु का
२७ वषु पिता ॥ २७ ॥ वनधूमस्वेदकैः धनाद्यदकः कायी नवानसमं खनक
डाः गाम्बजायाडा वादह सुखानभा ॥ २८ ॥ सुखापिपविहर्क वां ४ पयकादिय
द४ प४ ११ रिद्य न काक गालनः बृहपु कं ४४ कायभा ॥ २९ ॥ सुखेजातिनकास

वान
११

दरुचागासु नालंककायिसन॥सक्षिनाह विगसर्पसर्पकि मसोनरुयंकवीक्ष॥३॥
ननइकागावगकाग्य॥सुडाइवसर्नः ताउमसालमशिनेरु घवपाडाकनस
त्वं.धसर्पसमग्याहापूना॥ ॥पागापागवि(गधनधनूपनगयाचिवा॥कृष्ण ॥१॥
निःशुवतक्रीचक्रीवानिप्रवतविषं॥३॥यागअयागवि(गधन.साडासर्पडा
धं.सायागइलसां.घासनकान.इइपिमय.सर्पनइलसां.इइनयातीविषचितयी

३॥ ॥इडगकुमितिहृत्वा.नापकृतकदाचन॥कालइडनमायानिदशकंवदि
वीडवता॥३॥विवागकुवकालयसकडा.ज्वकि कालवलासविवागकुसुष
विद्यामगशकअग्निधं.ददचपाडावियु॥ ॥षडीककवकदावाअगीशिसव
पिंगला॥धार्मीकाधचपाशुवकुदुसाकनविद्यत॥३॥मिखायालयाक.पूय
ताड० दासनदडा.गियुमिखायाक.चयता० दासनदडा.काशयाकखलयाक

वान
१२

गति किं ता १०० दापन दश धृष्टिया कुरु कुरु दापन संखा मइ ॥ ॥ लान कुरु दापन
शाम गुरु दप विष्णु कुरु विष्णु ससमय कार्य विना गम्य गच्छति ॥ ३९ ॥ धान सदा क
कपति इवावा वडा मिश्र लावना सने हा गा वत मात्र कान वसा विष्णु सगा तदा स
कार्य नाग रुय रुडा ॥ ॥ मइ ने व मइ दं दं ति मइ नां दं ति दात्र रां ॥ नासा क मइ ना किं वि
कृष्णा ह्यु न तना मइ ॥ ४० ॥ नाय न नाय शमाव करी नाय न कुरु क माव करी ॥

१२

त्यनद मदि निया यत्र व वास मया क गो व मइ सक वा वया क स वि
रु स द रु वा वया क ध्व स गा मइ ॥ ॥ यो वि प्रो वि प्र म मि क द य लो
उद मिष्य आः अक वं ने व ग न वं द न स्य व व रु स्य य ॥ ॥ वास म न म
या अक व न अग्नि व वास म व अक व न म क दी य व व या अक व म
उव व मिष्य व अक व म सदा द व व थ सा व अक व म ध्व स म

यनयानयनस्य यत्रिवाद्यनस्य यत्रिवाद्यनस्य पुनस्तनः यत्नः य
 निवृत्तयः ॥ यनस्य यनधनः मन्दिनः क्रायावसक्तियः दास
 धनपुनस्तनसः ऊननयादः नाउरमात्ता ॥ १० ॥ **यत्रिवाद्यनस्य** ॥
 नः पुनस्तनस्य यत्रिवाद्यनः वृत्तयः क्रादमसिक्तः विषयः सप्तमस्य ॥
 यत्रिवाद्यनस्य यत्रिवाद्यनः वृत्तयः क्रादमसिक्तः विषयः सप्तमस्य ॥

नमात्ताः पुनस्तनस्य यत्रिवाद्यनस्य यत्रिवाद्यनस्य पुनस्तनः यत्नः य
 यदमं वृत्तयः क्रादमसिक्तः विषयः सप्तमस्य ॥ ११ ॥
 ॥ सप्तमस्य यत्रिवाद्यनस्य यत्रिवाद्यनस्य पुनस्तनः यत्नः य
 ॥ सप्तमस्य यत्रिवाद्यनस्य यत्रिवाद्यनस्य पुनस्तनः यत्नः य
 ॥ सप्तमस्य यत्रिवाद्यनस्य यत्रिवाद्यनस्य पुनस्तनः यत्नः य

स्वर्गया अयुः सत्राय निःत्रगावतिः तिस्रस्तुमाः मयात्री मनका धसवनस
 वाउथिग्वययन सनाः भवया मारुन दाअ निवृत्तियाद माद रुमाना ॥
 भयकार्य पविद्वय सद साविद्व लादयः विपरिष मदादान पत्रिवडिदि
 वक्रमः ॥ गनममः कार्य सहदया नः कुरुक स नरुतद रुसना विपरि
 सव मदादानः धवि वक्रम म नाउरुमा त ॥ ॥ रुका क म पश्यः कोर्य का

येरु त्यमा सदाकार्य व संद दाः कुरुयः सर्वदा वधिः ॥ रुक म रुक साया
 अकार्य अकार्य रुत्ययायः सदाकार्य संसंद द सग्यय आग्य सदाहानी रुव
 सना ॥ ५५ ॥ रुकयं मक लीनानां नाजाय मायडी विनाः रुकयं हान म रुमाः रुव
 पूर्व पकात्रिभां अकतीयां भवया ऊवतिन स्यवादन नाजाव हाय आग्य
 यवधे नावा हाय मा त ॥ ५६ ॥ पादपानां रुय वा रुः पमानां मिमि ना रुयः पवमानां

हयवशाः ऊर्ध्वान्द्विपदाहयं ॥ शिमाया हयरुसः यत्रेयाहयः मिमित्रिकात्रय
 वनयाहयः सत्रकः ऊर्ध्वयाहयमनूया ॥ ३१ ॥ सागायदिविषंदयाः न्निताविः
 कायनेसकं ॥ राजाकनातिवानायः काभकुमारविष्मि ॥ कदाचिदमासनयसः
 विप्रदास्यवदनं कायमिनं ॥ राजानयन्यायानकास्यः धवनसऊनशायायअस
 ॥ ३२ ॥ यत्रवाजास्वयं योत्रः समसुसयनादिगः ॥ नशाहंकिं कप्रिष्मिः यतोवाजा

रुनं ॥ १३ ॥ किं कनातिनत्रेयाहः ॥ उरुमाभः स्वकर्मतिः ॥ अथनेव^मनखाभां
 वृद्धिकमाभनसात्रिभा ॥ ॥ हानिशयावः मनस्यहयास्त्रयः ॥ अकर्मम^मया
 धंनवमगाकः ~~मत्पयंजीवपुत्रस्यवः~~ वृद्धिरुयवकर्मतिय ॥ १४ ॥ हसस्य
 हयमंदानं ॥ सत्यकृष्टस्यहयमं ॥ पुनंवहयमंकर्तुः हयमः किं पुमाऊनं ॥

वादा नया आसंका न दानयाय कथया आसंका न सत्य वदन नय कथया नया
 आसंका धमख दन आसंका न नियाया पुयाउन न व निउरु वमं मुमं द
 ममं यय ह वनं स्ववलिह वमं यं ता यनानं ह वं व यो मुया आसंका न स
 व निउरु यः सिमाया आसंका न वादाया व वाने मिउनया आसंका स वः
 लि न वरु न य य कं वा नः स्व ताः स्वामी स स्व ता दया तरु य न क वं ह व

वगनस्त्रकनः (लोभासद्विरुद्धः) ॥ ८१ ॥ विरुनक्तः यन्त्रयत्तः मादुदयात्तत्ताऊनः ॥
 वदन्मसमयात्तयंभवयुषिंउक्तं ॥ वदयकनः अग्नयंविषः मासयाकनता
 कनंविषः सायाकनथमवसमानविषः थमथ्वथमंरुषियातदना ॥ ८२ ॥
 पिताकीनयाभनः वृक्षगीगमभनवः वदाकनविद्यानयः ससुधानयकंउक्तं
 ॥ कथितसायादृष्टमादानंः वृक्षगीद्वयसंगयादानः वदाकनविद्यानयाः

दान धर्म सुदुर्लभ वपनाया ॥ ६३ ॥ सुदीर्घ सुत यारु क मास म के नि न न न
 जीवमाना व व क ला म नः धन न थ जाय न ॥ सुदीर्घा या सा दा नि न न नि मा न
 व सा क्रि प न स्य वानः धर्म म्वा म्वा सु द श नः सि क ना सः खि वा श य व ॥ ६४ ॥ सु न ६
 सो ना कु या ना नीः य न दान मु ता ऊ न व सु दान म न का नः वि शा दा न दि जा क ॥
 मः ३ द म या ग मि साः य व स द य क न या ला ड व सु ल व न स नी या ज न
 खा त

॥ ३ ॥ धर्म त्वे स्य न ता क ॥ ६३ ॥
 ग न य व न व न वा गा उ न नि वा मा सी श या रु ल न उ गि रु स म द न सा नी ऊ न ना अ
 मि त्रा य मि या म लो स य वा ऊ क ता नि वा नि ल्य म वा य वा व मः स यः प्र म य वा मि ष
 न मि न तं स मि साः म ल्व स य वा जा ध र क्रि पं ड य वा ल या द क ल्वा व न प्र म
 मा व क र व ध व ता न म या ॥ ६४ ॥ सु क मा न मि या व दि वा ला क म न अ द दि
 य ता न मे थ न नि दा स य सा म द वा सि य न ॥ स य मि ता डि पि मि ता स थ या स
 य वं स ता ध नि स थ मे थ न या दा न वा न क सु ध व ता न क ल्वा व न य म मा

॥ २५ ॥

॥ २६ ॥

व कुरुवाँ सयुमा सयुनं सयुः वा ता मुनीन ताडनं उ कय केन व भया सयः युम
 कनामिषं टां न के स्या कसा न क का या दतः वा र क मु द ह वा ज्ञान यान स स संखनः
 सिमा या स सान कय का व वा दानं ध य ता नः आ म फ न व न न के म नों अ नो दः
 दृगुभा दृष्टि य द्वा द दृगुभं य या य या द विगुभं मा नः मा न्ता द दृगुभं य नों अ न
 या क क नः या उ गुभ मा धि मा धिया या उ गुभ द दः द द या क या उ गुभ सा सा या क न
 या उ गुभ य सों यं व क्रि य वि न ह्य निः स द्वा त द य या न वः अ ति मा नी व का सी व

॥ २७ ॥

॥ ॥

॥ २८ ॥

गुन दृष्टी कथे व वाँ थ द मा न न को न मं आ म मा द क द व र द्धि ता ति अ ति सा
 वा का वः का सी गुन १४ थ द मा न आ म मा व क्रि यां ग ति वि षे थ व द थ स
 य तिः स ल्य क दि तिः अ न के द न मा स थ स य ति द्वा य न म नों सी द द्वा आ म प द
 क व द स ल्य वा दि द क अ ता ति दानः गी त थ द म न न द वि वा स थ व न यं क न ॥ २९ ॥
 अ स वा य दि स स नः सा व म न व रु द य का म्वा वा मः स ता सं गः गं ग म्मं ग म्म य
 क नं ॥ अ सा व स सा व स थ य ता स सा व रु नं क क्क धा न सा स ल्य न व व सं ग या

काभा वा म

यगंगासंखनमहादवपूजा यथाधरसागरन १००॥ ॐ मिथीयानक २६
 साधनमाय ॥ ६६ ॥ ० ॥ १२ ॥ ३६ ॥ ॥ कुमा ३०० पृ ॥



आशा अर्चना

640

ASHA ARCHIVES